GLOBAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES UGC APPROVED ISSN: - 2348-0459
www.gjms.co.in
Volume-6, Issue-7, June 2017 Impact Factor: 3.987

Paper ID: UGC 48846-825

प्राचीन काल मे स्मृतियों का अध्ययन

ज्योति कौशल
प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व डॉ हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म0प्र0

सारांश स्मृतियों का मुख्य उददेश्य मनुष्यो का आचार,व्यवहार व्यवस्था की शिक्षा देना था। स्मृति शास्त्र को धर्म के ज्ञाता मुनियो न मुख्यतः तीन भागो में विभाजित किया है। आचार व्यवहार प्रायश्चित अथवा दंड। इन तीन विषयों के बिना व्यक्ति और समाज का न तो विकास हो सकता है और न मनुष्य ''समस्त प्राणियो के मुकुटमणि की उच्च पदवी को पा सकता है।'' भारतीय धर्म का मूल वेद है। आस्तिक हिन्दुओ की मान्यता है कि वेदो मे जो ज्ञान राशि पायी जाती है। वह मानव मस्तिष्क का चमत्कार नही है। वरन एक ऐसा दैवीय ज्ञान है। जो सदा से है। और सदा रहेगा ऋषियो ने ''श्रुति'' शब्द को विश्व कल्याण की भावना से जगत मे प्रसारित किया है। विश्व को सभी विधाओ का ज्ञान एक साथ देना भी संभव भी नही था। क्योकि उस समय लिखने की प्रथा प्रचलन में नही थी। शिष्यगण जो कुछ आचार्य के मुख से सुनते थे। सुनकर उसे कंठस्थ कर लेते थे। उसी को श्रुति कहा गया है।

शब्दकोश आचार्य ,स्मृतियों, आचार,व्यवहार

प्रस्तावना

भारतीय धर्म का म्ल वेद है। आस्तिक हिन्दुओ की मान्यता है कि वेदो मे जो ज्ञान राशि पायी जाती है। वह मानव मस्तिष्क का चमत्कार नही है। वरन एक ऐसा दैवीय ज्ञान है। जो सदा से है। और सदा रहेगा ऋषियो ने ''श्रुति'' शब्द को विश्व कल्याण की भावना से जगत मे प्रसारित किया है। विश्व को सभी विधाओ का ज्ञान एक साथ देना भी संभव भी नही था। क्योकि उस समय लिखने की प्रथा प्रचलन मे नही थी। शिष्यगण जो कुछ आचार्य के मुख से सुनते थे। सुनकर उसे कंठस्थ कर लेते थे। उसी को श्रुति कहा गया है। इन विधाओ के लाखो श्लोको को याद रख पाना सभव नही था। इसलिए वैदिक ज्ञान का अनुभव रखने वाले ऋषियो ने उसे ऐसे चीज रूप से प्रकट किया जिसे स्मरण रखा जा सके,इसके लिए उसके विभिन्न अंगो का विकास विस्तार ज्ञान विज्ञान की अन्य शाखाओ के ग्रंथो द्वारा हुआ जैसे उपनिषद, दर्शन, स्मृतियॉ, आयुर्वेद, ज्योतिष, धनुर्वेद, गंधर्ववेद, कल्प, निरूक्त आदि।

स्मृतिया का मुख्य उददेश्य मनुष्यो का आचार,व्यवहार व्यवस्था की शिक्षा देना था।

स्मृति शास्त्र को धर्म के ज्ञाता मुनियो ने मुख्यतः तीन भागो म विभाजित किया है। आचार व्यवहार प्रायश्चित अथवा दंड। इन तीन विषया के बिना व्यक्ति और समाज का न तो विकास हो सकता है और न मनुष्य ''समस्त प्राणियो के मुकुटमणि की उच्च पदवी को पा सकता है।''

स्मृतियों से हम इन बातो का ज्ञान प्राप्त होता है। कि मनुष्य को अपने व्यक्तित्व का विकास किस प्रकार करना चाहिए एवं उसे अपने अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने मे सहायता मिलती है।

प्राचीन भारत मे चारा पुरूषार्थो धर्म अर्थ काम एव मोक्ष म से प्रथम तीन पुरूषार्थ साधन तथा मोक्ष को साध्य एवं अंतिम लक्ष्य माना जाता था। व्यक्ति समाज और राज्य तीना ही। इस अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहते थे। स्मृतियॉ उनके लिए मार्ग दर्शन कराती थी।

प्राचीन भारतीय सभ्यता के ऐतिहासिक विकास म मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति का बड़ा महत्व ह। मानव धर्म पर लिखे इन दो ग्रंथा हिंदुओ की सामाजिक और धार्मिक पद्धतियो को व्यापक रूप से प्रभावित किया।

वेद को श्रुति और स्मृतियो को धर्मशास्त्र कहा गया है। धर्मशास्त्रा म उन कर्मो को विधान दिया गया जिससे मनुष्य को स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त होता है।

स्मृति साहित्य धर्म का एक प्रमुख अंग है। और उसी के द्वारा हमको धर्म के क्रियात्मक रूप से स्पष्ट दर्शन हो सकते है। स्मृतियो म प्रत्येक वर्ण आश्रम और व्यक्ति के जो धर्म कर्तव्य बतलाये गये है। उससे ज्ञात होता है, एक भारतीय का रहन सहन और चरित्र कितना शुद्ध पवित्र और उदान्त हुआ करता है।

स्मृतियों का समय–

स्मृतिया का काल निर्धारण करना सरल नही है। क्योंकि कई स्मृतिया का प्रणयन ईसा से कई सौ वर्ष पूर्व हुआ था। यथा गौतम आपस्तम्ब बौधायन के धर्मसूत्र एवं मनुस्मृति। वही याज्ञवल्क्य पाराशर एवं नारद स्मृति का प्रणयन ईसा की प्रथम शताब्दी मे हुआ। 400 ईसवी से 1000 ईसवी तक कई स्मृतियो की रचना की गई।

Paper ID: UGC 48846-825

इस प्रकार स्मृतिया का रचना काल 200 ईसा पूर्व से 1110 ईस्वी तक संभव था। प्रो.बी.बी. काणे ने अपनी पुस्तक धर्मशास्त्र का इतिहास मे कुछ स्मृतियो का काल इस प्रकार बताया है मनु की रचना 200 ईसा पूर्व से 100 ईस्वी के मध्य हुई। याज्ञकल्प एवं विष्णु स्मृति को 100 ईस्वी से 300 ईस्वी के मध्य माना, वही नारद स्मृति का काल 100 से 400 ईस्वी वृहस्पति स्मृति का समय 300 ईस्वी से 500 ईस्वो तक कात्यायन स्मृति का समय 400 ईस्वी से 600 ईस्वी तक एवं पाराशर शंख देंवल स्मृतिया का काल 600 से 900 ई. तक माना।[1]

सन्दर्भ– 1–धर्मशास्त्र का इतिहास–पी.व्ही.,काणे पृष्ठ –14.15 द्वितीय संस्करण

मनुस्मृति .

मनुस्मृति को रचना 200 ईसा पूर्व से 100 ईस्वी के मध्य हुई। मनुस्मृति का सर्वप्रथम मुद्रण सन 1813 ई. मे कलकत्ता मे हुआ। मनुस्मृति का हिन्दी टीकासहित अन्य भाषाओ मे अनुवाद हुआ।

याज्ञवल्क्य स्मृति.

याज्ञवल्क्य स्मृति का काल निर्धारण का प्रश्न विवादग्रस्त है। इस स्मृति का रचनाकाल मनुस्मृति के बाद का है। इसकी सीमा मनुस्म्रति से निर्धारण की जा सकती है। इसका समय नवी शताब्दी की पूर्वाद्ध है।

पाराशर स्मृति.

पाराशर स्मृति का निर्माण काल 600 से 900 ईस्वी तक माना गया है।

नारद स्मृति .

नारद स्मृति का काल 100 स 400 ई. तक माना गया है।

वृहस्पति स्मृति.

वृहस्पति स्मृति का काल 200 से 400 ई. के बीच माना है डॉ जाली के अनुसार वृहस्पति छठी या सातवी. शताब्दी म हुये थे।

कात्यायन स्मृति.

कात्यायन के काल निर्धारण म कठिनाई है। ये मनु एवं याज्ञवल्क्य के बाद आते है। उनके पूर्व नारद एवं वृहस्पति आ चुके थे। अतः अधिक से अधिक वे ईसा बाद तीसरी या चौथी शताब्दी तक जा सकते है। कात्यायन चौथी तथा छठी शताब्दी के मध्य म कभी हुए होगें। [2]

पुलस्त्य समृति.

इसकी तिथि 400 एवं 700 ई. के मध्य मानी गई है। दस रत्नाकर ने मृगचर्म दान के बारे म पुलस्त्य का उदाहरण दिया है। [3]

व्यास स्मृति .

व्यास स्मृति का रचनाकाल ईसा के बाद दूसरी एवं पांचवी शताब्दी के बीच माना जाता है।

हारीत स्मृति.

हारीत वृहस्पति एवं कात्यायन के 700 समकालीन प्रतीत होते है। अतः 400 से 700 के बीच म किसी समय उनको स्मृति का प्रणय न हुआ।

2. पी. व्ही काणे– धर्मशास्त्र का इतिहास पृष्ठ क्रमांक 58
3. पी. व्ही काणे– धर्मशास्त्र का इतिहास पृष्ठ क्रमांक 61

मनुस्मृति

आज हमे जितनी भी स्मृतियॉ प्राप्त है। उन सभी स्मृतियों म मनुस्मृति का महत्व सबसे अधिक है। अतः मनुस्मृति ही प्रधान स्मृति है। यह पर्याप्त विस्तार से लिखी गयी है। इसम मानव जीवन संबंधी समस्त विषय क्रम से दिये गये है। पहले अध्याय म सृष्टि रचना और मनुष्या की उत्पत्ति का वर्णन किया है। दूसरे अध्याय मे धर्म चारा आश्रमो के धर्म और कर्तव्यो का विस्तारपूर्वक वर्णन है। मनु ने अपने तीसरे अध्याय मे विवाह के आठ प्रकार कन्या की पात्रता एवं महत्व का वर्णन गृहस्थ के सभी प्राणियो मित्रता का व्यवहार अभयदान देना निंदा से बचना आलस्य का त्याग करना, संध्या समय वंदना करना आदि का वर्णन है। सातवे और आठव अध्याय म राज्य शासन दंड विधान साक्षी आदि का वर्णन है। समस्त मनुस्मृतिया का मूल आधार मनुस्मृति ही है।

मनुस्मृति सबसे प्राचीन है। इसका प्रमाण यह है। कि प्राचीन सभ्यताओ म भी प्रथम कानून बनाने का नाम मनु से मिलता जुलता माना गया है।

भारतीय स्मृतिया मे मनुस्मृति सबसे प्राचीन है। और प्रमुख स्थान रखती है। उसके नियम और आदेश अति प्राचीन काल से मानव जाति का मार्ग दर्शन करते आये है। और इस दृष्टि से इसका दूसरा नाम मानव धर्म सूत्र भी सार्थक है। अन्य स्मृतियो की तरह के उसमे ब्रहमचर्य पालन पंचयज्ञ छुआछूत और प्रायश्चित के प्रचलित नियम ही नही दिये गये वरन प्रत्येक विषय म विवेक से काम लेकर समाज के वास्वतिक हित का ध्यान भी रखा गया है। जहॉ अन्य लोगो मे सुवण, भूमि, घी आदि के दान की प्रशंसा की है। वहां मनु जी कहते है। दान तो अच्छे और शुभ फलदायक होते है। जैसे– गा, भूमि, वस्त्र, तिल, सुवर्ण आदि का दान। ब्रहमदान इनम सर्वश्रेष्ठ है। [4]

मनुस्मृति केवल धर्मशास्त्र ही नही वरन एक ऐसा ग्रंथ है। जिसमे मनुष्य के संपूर्ण सामाजिक जीवन की व्यवस्था दी गई है। हिंदुआ के कानूनी ग्रथा म सबसे प्रसिद्ध मनु का धर्मशास्त्र है। जो आज भी करोड़ो हिन्दुओ क विचारो और जीवन को प्रभावित करता है।

मनुस्मृति मे बारह अध्याय है। जिनम वर्णित मुख्य विषय इस प्रकार है। 1. संसार की उत्पत्ति 2. जात कर्म आदि संस्कार विधि ब्रहमचार्य 3. पंचमहायज्ञ नित्य श्राद्ध विधि 4. ग्रहस्थ के नियम 5. भक्ष्य तथा अभक्ष्य पदार्थ। 6. वानप्रस्थ तथा सन्यास

Paper ID: UGC 48846-825

आश्रम 7. व्यवहार के मुकदमो का निर्णय कर ग्रहण आदि राजधर्म 8. साक्षिया से प्रश्न विधि 9. स्त्री तथा पुरूष के धर्म धन आदि संपत्ति का विभाजन 10.आपत्तिकाल के कर्तव्य धर्म 11. पाप की निवृत्ति के लिए प्रायश्चित आदि। 12. मोक्षप्रद आत्मज्ञान।

4– पं श्री राम शर्मा आचार्य– बीस स्मृतियां– प्रथम खंड पृष्ठ संख्या 22

यज्ञवल्क्य स्मृति–

महत्व की दृष्टि से मनुस्मृति के पश्चात याज्ञवल्क्य की ही गिनती की जाती है। इसमे सभी विषय संक्षिप्त रूप से वर्णित है। जैसा कानूनो मे होना आवश्यक है। याज्ञवल्क्य स्मृति को तीन भागो मे विभाजित किया गया है। आचारध्याय व्यवहाराध्याय प्रायशिचताध्याय प्रथम मे चारा आश्रमा के नियम व कर्तव्य ग्रहशांति विनाशक अर्थात गणनायक की शान्ति राज्य धर्म का वर्णन किया गया है। प्रथम अध्याय के आरभं में धर्म का जो लक्षण बताया है। वही सर्वसम्मत है। मनुष्य मात्र के स्वीकार करने योग्य है। याज्ञवल्क्य के अनुसार अठारह पुराण न्याय मीमांसा धर्मशास्त्र और व्याकरण आदि 6 अंगो के सहित चार वेद ये चौदह विद्या के अर्थात पुरूषार्थ ज्ञान और धर्म के कारण है।

अत्रि स्मृति.

अत्रि स्मृति मे धार्मिक कर्तव्यो का सारांश बड़ा प्रशंसनीय है। इसम दान के लिए अपात्र और कुपात्र ब्राहमणों का वर्णन किया गया है। महार्षि अत्रि नामधारी ब्राहमणो के बहुत विरूद्ध थे। जो अपने धर्म कर्तव्या का पालन न करने सभी प्रकार के भले बुरे कर्मो से उदर पोषण करते रहते है। दान या प्रतिग्रह देना लेना आदि आत्रि के मतानुसार बहुत विचारनीय विषय है। चाहे जिसको दान दे डालने से न दाता का भला होता है। और न लेने वाला का कल्याण।

त्यागी तथा सन्यासी को एक ही स्थान से भोजन ग्रहण करते रहना। अत्यंत गर्हित है। चाहे वह अन्न दान बृहस्पति के घर का ही क्या न हो।

पाराशर स्मृति.

पाराशर स्मृति की रचना के विषय मे भी अनेक भ्रांतिया है। इसका प्रमुख कारण पाराशर ऋषि का एक ऐतिहासिक पुरूष होना पाराशर ऋषि व्यास के पिता थे। तथा व्यास महाभारत के रूप म प्रसिद्ध है। इस आधार पर पाराशर का अस्तित्व महाभारत से पूर्व का है।

पाराशर स्मृति का विषय बहुत सीमित है। इस स्मृति म पाप पातक तथा उनके प्रायश्चित का वर्णन किया गया है। महान विद्धान आचार्य सायन माधव ने इस स्मति की टीका मे उन सभी विषयो का समावेश किया है। जिनका स्मृतियो मे उल्लेख रहता है। उदा. के लिए मनुस्मृति व्यवहार राजधर्म पातक प्रायश्चित आदि का वर्णन करती है। उसी प्रकार सायन माधवाचार्य ने अपनी टीका मे उक्त विषयो का समावेश करके पाराशर स्मृति के सीमित क्षेत्र को अत्यधिक विस्तृत कर दिया है।

नारद स्मृति.

नारद स्मृति का प्रतिपाद्य विषय व्यवहार है। नारद स्मृति को देखने से लगता है। उसका व्यवहार ही है। मनु तथा याज्ञवल्क्य की तुलना म नारद म व्यवहार की समीक्षा अधिक परिपक्व प्रतीत होती है।

नारद की स्मृति याज्ञवल्क्य के बाद की ही कृति है। नारद स्मृति याज्ञवल्क्य स्मृति के पश्चात किसी समय लिखी गयी होगी।

विष्णु स्मृति.

इस गथ मे मनुस्मृति के समान मानव जीवन तथा धर्म पालन के प्रत्येक अंग पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया है। आर आरंभ मे जो यज्ञ बाराह तथा पृथ्वी का देवी रूप म वर्णन किया है। वह कविव्यमय है। साहित्यिकता का परिचायक है। ग्रंथ के अंत मे भी लक्ष्मी और वसुधा के संवाद के रूप म श्री के निवास स्थानो का जो वर्णन है। वह लेखक के उच्चकोटि के साहित्यिक ज्ञान का नमूना है।

गृहस्थ आश्रम को विष्णु स्मृति मे बहुत अधिक महत्व दिया है। शेष सभी आश्रमो का पालन गृहस्थ आश्रम द्वारा ही होता है। सबकी उत्पत्ति पालन पोषण गृहस्थ के द्वारा हाता है। इसलिए गृहस्थ आश्रम निश्चित ही सर्वोपरि है। विष्ण स्मृति मे भौतिक शिक्षाओ एवं नैतिक कर्तव्या का बहुत विस्तृत वर्णन है।

औशनस स्मृति .

शिष्टाचार की शिक्षा और महत्व का विशद रूप से वर्णन इस स्मृति की विशेषता है। औशनस स्मृति म कहा गया है। कि ब्राहमण से मिलने पर कुशल पूछनी चाहिए। क्षत्रिय से अनामय स्वस्थता वैश्य से राजी खुशी और शूद्र से शारीरिक कुशलता पूछनी चाहिए। उपाध्याय पिता ज्येष्ठ भ्राता राजा मामा ससुर भाई का नाना बाबा चाचा ये सब पिता तुल्य मानवीय माने जाने चाहिए। माता नानी गुरू पत्नि माता पिता की बहन आदि सास दादी आदि सभी पितृवंश एवं मातृवंश के सब गुरूजन होते हैं

व्यास स्मृति.

व्यास स्मृति मे गहस्थ धर्म का वर्णन करते हुये कहा हे। जब तक पुरूष भार्या प्राप्त नही कर लेता तब तक वह आधा ही कहा जाता है। आधा शरीर सब काम नही कर सकता इसलिए मनुष्यो को लोक परलोक के साधन के लिए गृहस्थ बनकर स्त्री एक चित्त होकर धर्म अर्थ और काम का साधन करना चाहिए। इसमे स्त्री का कार्य विशेष महत्वपूर्ण है। पुरूषो को भी सच्चा

Paper ID: UGC 48846-825

और अनुरक्त होना चाहिए। इसम स्त्री और पुरूष दोनो के कार्यो का महत्व बताया है।

वशिष्ट स्मृति–

महर्षि वशिष्ट ने वशिष्ट स्मृति म समाज द्राही प्रवृत्ति की तीव्र शब्दा म भर्त्सना की है।

महर्षि वशिष्ठ ने कहा हैं। ब्राहमण और क्षत्रिय को वार्धुषिक का अन्न नही खाना चाहिए। वार्धुषिक उसे कहते हे। जो सस्ते भाव के अनाज को इकटठा करके मंहगे भाव बेचता है वह एक अत्यंत गर्हित कार्य है। जब ब्रहम हत्या आदि पापा की मंहगा बेचने की कृत्य के साथ तुलना की गई तो वार्धुषिक का भ्रूण हत्या के समान ठहरा वार्धुषिक से संबंध म वशिष्ट की सम्मति यह है। कि बीस का पंचमांश वृद्धि की जा सकती है। [5]

ब्राहमण का मौन्जी बंधन से पूर्व कुछ भी कर्म नही है। जब तक वह वेदाध्ययन का अधिकार नही पाता है वृत्ति से शूद्र के तुल्य होता है। वह केवल उदक कर्म ही कर सकता है। [6]

वेद विद्या ब्राहमण के पास आकर उससे कहती है कि मेरी रक्षा करो मै तेरी निधि हूँ। जो असूया करने वाला हो कुटिल हो और संयम शून्य हो। उसे मुझे मत देना। तभी मै वीर्य वाली होउंगी। [7]

5. पं श्रीराम शर्मा बीस स्मृतियॉ प्रथमखंड प्र.40
6. बीस स्मृतिया वशिष्ट स्मृति श्लोक 58.59 प्र. 253
7. बीस स्मृतिया– वशिष्ट स्मृति – श्लोक – 60

कात्यायन स्मृति.

कात्यायन स्मृति म श्राद्ध अग्निहोत्र पावाक आदि धर्म कृत्यों पर विशेष रूप से बताया गया हैं। महर्षि कात्यायन ने अग्निहोत्र म स्त्रिया के अधिकारो का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। और बताया है। कि बिना स्त्री के अग्निहोत्र नही हो सकता यदि एक स्त्री की मृत्यु हो जाने पर किसी भी प्रकार दूसरी स्त्री न की जा सके तो धातु या कुश की प्रतीक स्वरूप स्त्री बनाकर अग्निहोत्र कर्म को पूरा करना चाहिए। इस संबंध मे श्रीरामचंद्र जी का उदा. दिया है। जिन्होने सीता जी की सुवर्ण मूर्ति बनाकर बहुत समय तक यज्ञ कार्य सम्पादन किया था । इस दृष्टि से कात्यायन ने स्त्री का महत्व बहुत अधिक माना है।

निष्कर्ष.

स्मृतियो को पढन से हमे यह ज्ञात होता है। स्मृति वेद षाड़मय से इतर गथो मे तथा पाणिनि व्याकरण गृहस्थ एवं धर्मसूत्रा महाभारत मनु याज्ञवल्क्य एवं अन्य ग्रंथो से संबंधित है। दूसरे अर्थ म स्मृति एवं धर्मशास्त्र का एक ही अर्थ है। [8]

मनुस्मृति के अनुसार वेद को श्रुति एवं धर्मशास्त्र को स्मृति जानना चाहिए। [9]

श्रुति और स्मृति मे जो कहा है। वही धर्म है। [10]

श्रुति तथा स्मृति ब्राहमणो मे निर्मित दो नेत्र है। इनमे से एक से रहित काना तथा दोना से रहित अंधा है। [11]

स्मृतियो से हमें धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष आदि पुरूषार्थो का वर्णन मिलता है। अधिकांश स्मृतियॉ पद्य म प्राप्त होती है। स्मृतियॉ की कोई निश्चित संख्या नही मिलती है। स्मृति सीधे स्मरण शक्ति पर प्रभाव डालती है। स्मृति के बारे मे बौधायन ने और गौतम ने स्मृति को वेद के जानने वालो का स्मरण माना है।

8.पी व्ही.काणे धर्मशास्त्र का इतिहास – पृथम खंड
9.हरगोविन्द शास्त्री– मनुस्मृति अध्याय 210 पृष्ठ–37
10बीस स्मृतियॉ– वशिष्ट स्मृतियॉ– 1.3 पृष्ठ– 247
11.हारीत स्मृति– 1.24 पृष्ठ– 200